प्रसार शिक्षा

Safina Kausar
Assistent professor.
Department of Home Science.
Al. Hafeez College. Ara.

B.A part III
paper 7th VII

Topic : प्रसार विधियों के संयोजक प्रभावनात्मक तत्व, संचार क्रियाएं इनके प्रयोग की कला।

Scanned by TapScanner

स्वरूप के आधार पर वर्गीकरण :

इस आधार पर शिक्षण पद्धति एवं प्रसार साधनों का वर्गीकरण होता है जिसमें समाचार पत्र, व्यक्तिगत पत्र आदि आते हैं प्रसार विधियाँ कैसे रूप एवं आकार की हैं देखा जाता है

ही डालना है

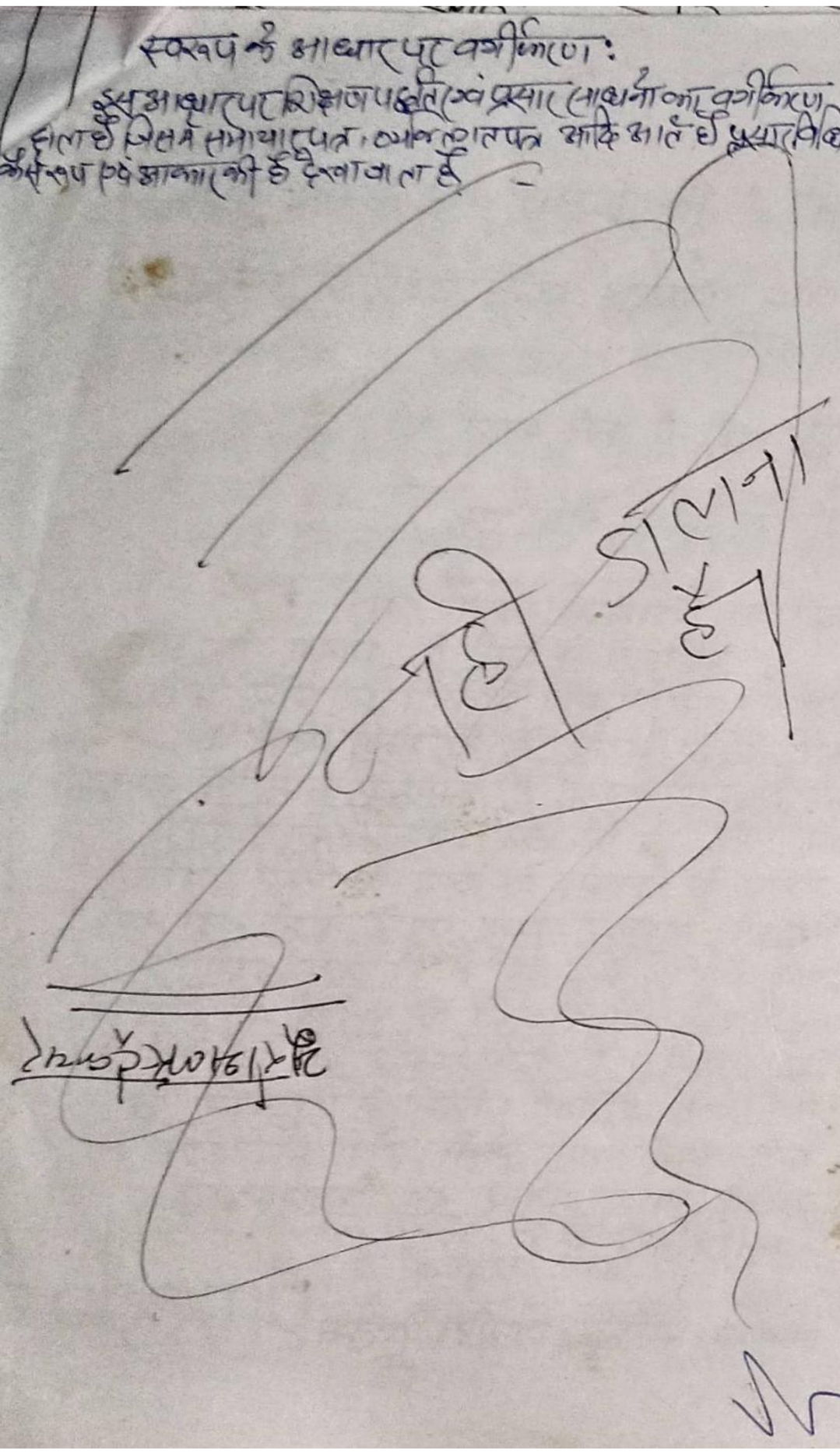

Communication of Extension Education

संचार :— परिचय :→ जहाँ संचार क्रियाओं से कई लाभ होते हैं, वही उनके उपयोग में कई समस्यायें उठ खड़ी होती हैं इन समस्याओं में निम्न लिखित प्रमुख है।

1. व्यक्तिगत पहुँच विधि की मुख्य समस्या आपसी कलह से बचना है इस विधि में व्यक्ति व्यक्ति से संपर्क किया जाता है मनुष्य का स्वभाविक स्वभाव एक व्यक्ति से संपर्क करने पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

2. व्यक्ति गत पहुँच विधि की सबसे बड़ी समस्या समय का बहुत अधिक लगना है व्यक्ति व्यक्ति से संपर्क करने के लिए है व्यक्ति की सुविधा के भार का भार समय ढूढ़ता है।

3. सामूहिक पहुँच विधि के लागू करने से सबसे बड़ी समस्या उपयुक्त समय की कमी रहती है।

4. लंबी अवधी के प्रदर्शन में समय और श्रम अधिक लगता है। इसके कारण कभी शत्रुता बढ़ जाती है।

5. विचार विमर्श की सबसे बड़ी समस्या समूह के सभी लोगों का एक विचार पर सहमत होना है।

amoda

6. विचार विमर्श के दौरान वास्तविक में विवाद उत्पन्न हो जाते है।

7. संचार की जन पहुँच विधियाँ वास्तविक में का भी महंगी पड़ती है, उचित धन की उपलब्धता इस के मार्ग में सबसे बड़ी समस्या है।

विभिन्न विधि में इन समस्याओं के रहते है। भी संचार क्रियाएँ हमारे आधुनिक जीवन और विकास कि एक कड़ी है।

feed back जांच करना →

संचार में प्रतिपुष्टी : → प्रसार शिक्षा का माध्यम संचार ही है। संसार के विभिन्न तत्वों से गुजरा हुआ किसी भी वस्तु की जानकारी प्राप्त कर्ता तक पहुचती है। प्रतिपुष्टी का अर्थ इसकी जाँच करना है। की संचार के विभिन्न तत्व अपने उद्देश्य में सफल रहे या नहीं इसके लिए ये आवश्यक है कि उद्देश्यों का विश्लेषण किया जाए विश्लेषण के दौरान संचार के विभिन्न तत्वों में आई बाधा का आकलन हो जाता है। एवं संचार क्रिया के किसी तत्व कि कमी को दूर करने का उपाय निकाला जाता है।

प्रतिपुष्टी से निम्नलिखित बाते सामने आती है।

1. संचार व्यवस्था अपने उद्देश्य में सफल रही या नहीं।
2. अगर नहीं तो कमी कहाँ थी।
3. कमी का कारण क्या था,
4. कमी का निराकरण क्या था।

प्रतिपुष्टी से कमी के कारण का पता लगाया जाता है तथा भविष्य में और अधिक सफलता पूर्वक संचार के विभिन्न तत्वों का इस्तेमाल हो सकता है। इसलिए काम की सफलता को जाँच ने के लिए विकास का उपयोग संचार के विकास के कार्य के लिए उपयोग जितना आज है उतना पहले कभी नहीं रहा। आज जीवित हर क्षेत्र में ही रही बातों अनुसंधानों एवं विचारों की खोज को जानने के लिए उत्सुक है इस प्रकार नई खोज होने तथा उनके ग्रामीण जीवन में पहुचने की दिनो-दिनो कम ~~होती~~ होती जा रही है। इसलिए आज संचार का विकासात्मक निम्नलिखित है।

1. ~~सविकृत~~ एकिकृत ग्रामीण विकास

कार्यक्रम → एकीकृत ग्रामीण विकास के योजना के अन्तर्गत गरीबी रेखा से नीचे का जीवन व्यतीत कर रहे लोगो का विभिन्न प्रयोजनाओ के लिए ऋण दिया जाता है।

2 संघन कृषि कार्यक्रम :→ संघन कृषि क्षेत्र कि कार्य क्रम योजना के अन्तर्गत उन्नत बीज सींचाई उन्नत कृषि यंत्र एवं फसल सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

3 पैकेज :→ पैकेज Pregran INT CNCsive Agriculture DIStrict Programme (IADP) इस के अन्तर्गत कृषकों को कृषि कि सभी सुविधाएं एक साथ उपलब्ध कराई जाती है।

4. ग्रामीण युवाओं के लिए स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण :→ इस योजना के अन्तर्गत ग्रामीण बेरोजगार युवको को अपना रोजगार स्थापित करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है।

5 कृषि विज्ञान केन्द्र :→ उद्यान कृषि विज्ञान केन्द्र में कि कृषि पशु पालन एवं मछली पालन के अन्तर्गत विधियों कि जानकारी दी जाती है।

amoda
comfort linen

6. विशेष कॉम्पोनेंट प्लान :→ विशेष कॉम्पोनेंट प्लान के अन्तर्गत हरिजनों के विकास के लिए कारगर कदम उठाएं जाते है।

7. प्रौढ़ शिक्षा :→ संचार के विभिन्न साधनों का उपयोग प्रौढ़ शिक्षा के लिए बढ़ जाता है इसके अतिरिक्त संचार साधन समुदाय विकास के कार्यक्रम को लोगो तक पहुचाने में काफी उपयोगी होती है।

* उत्प्रेरक एवं गतिशीलता के लिए संचार क्रिया को प्रभाव कारी बनाना आवश्यक होता है। प्रसार कार्यक्रम को उत्प्रेरक एवं गतिशीलता बनाने के लिए संचार क्रिया का निम्नलिखित रूप में किया जाना चाहिए।

1 जनता को संदेश देने से पहले ही जानकारी हो जाना चाहिए की प्राप्त कर्ता की तथा इनके लिए कौन सी विधि संचार ठीक होगी

2 संचार प्रक्रिया दो तरफा पद्धति है एक सुचना देने वाला तथा दुसरा सुचना लेने वाला इस लिए प्रेरक एवं प्राप्त कर्ता व्यवहार पूर्ण तरह मित्रता पूर्वक वातावरण में प्रश्न एवं उत्तर क्रिया का प्रयोग करना चाहिए इस तरह से प्रेरक को प्राप्त की

amoda
comfort linen

विषय सम्बंधित जनकारी का ज्ञान हो सकता है इससे संचार क्रिया सफल हो जाता है।

संचार क्रिया को संचार करने की जगह का वातावरण काफी प्रभावित करता है। जहाँ प्रेक्षक बैठता है उस स्थान का वातावरण शांत होना चाहिए तथा भौतिक सुविधाएँ भौतिक सुविधाएँ जैसे बैठने का जगह बिजली पानी का प्रबंध होना चाहिए वातावरण में शोर गुल होने से तथा भौतिक सुविधाएँओं के अभाव में संचार क्रिया सुचारुक रूप से नहीं चलती है। इससे विभिन्न प्रकार की बाधाएँ उत्पन्न होगी तथा संचार क्रिया पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

संचार क्रिया की सफल संचालन के लिए सभी सम्बंधित लोगों का सहयोग आवश्यक है।

संचार क्रिया को अधिक प्रभावित बनाये रखने के लिए समय-समय पर मूल्यांकन करना आवश्यक है इससे कमी को दूर किया।

संचार के कार्य

FUNCTION OF COMMUNICATION PROCESS

हमारे व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के कई कार्य संचार क्रिया के बिना संभव नहीं है। व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के कार्य ही संचार के कार्य है। ये कार्य निम्नलिखित है :-

1. कृषि को उन्नत करना → संचार का प्रमुख उद्देश्य कृषि को उन्नत करना है। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। उपज बढ़ाना तथा उपज की बिक्री को व्यवस्थित करना ही संचार क्रिया का कार्य होता है।

2. स्वास्थ्य सुविधाओं का महत्व → हमारा ग्रामीण समाज अशिक्षित है उन्हें विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी नहीं रहती है। इस कारण वे अस्वस्थ रहते हैं तथा उनके बच्चे कुपोषण के शिकार हो जाते हैं। संचार के माध्यम से ही उन्हें उत्तम पोषण की जानकारी दी जा सकती है।

3. आय में वृद्धि के लिए मदद करना → संचार क्रिया के द्वारा लोगों की आय में वृद्धि होती है।

Scanned by TapScanner

ग्रामीणों को खेती के अतिरिक्त अन्य स्रोतों जैसे - मुर्गी पालन, पशुपालन, फूलों की खेती इत्यादि की जानकारी दी जाती है जिससे उनकी आय बढ़ सके। संचार इसमें काफी मददगार साबित होता है।

4. ग्रामीणों के दृष्टिकोण में बदलाव लाना → संचार क्रिया ग्रामीणों के विभिन्न रूढ़िवादी एवं भ्रांतियों में बदलाव लाता है। जिससे लोग आधुनिक युग के साथ कदम से कदम मिला कर चल सके।

5. रहन-सहन के स्तर को ऊँचा करना → संचार क्रिया के द्वारा ग्रामीणों का रहन-सहन का स्तर ऊँचा किया जाता है। ग्रामीण समाज मानवीय जीवन की मूलभूत सुविधाओं का उपभोग कर बेहतर जीवन जी सके यह संचार के द्वारा ही संभव है।

6. ग्रामीणों को शिक्षित करना → जैसे की हम जानते है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अशिक्षा व्याप्त है। जिसके कारण ग्रामीणों को देश एवं विदेश की विभिन्न घटनाओं एवं अधिकारों की जानकारी नहीं हो पाती है। संचार प्रक्रिया उन्हें विभिन्न विषयों के संबंध में शिक्षित करने में मदद करता है।

7. नेतृत्व का विकास करना → संचार ग्रामीण नेतृत्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

8. महिलाओं का समाजिक जीवन विकसित करना → हमारे देश में महिलाओं का समाजिक जीवन-स्तर काफी नीचा है। संचार के द्वारा हम महिलाओं के जीवन स्तर में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला सकते हैं।

इस तरह यह कहा जा सकता है कि संचार कार्यों का हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं से गहरा संबंध है।

संचार-प्रणाली

ELEMENTS OF COMMUNICATIONS संचार के तत्व →

आज हम जितनी भी मानवीय अंतः क्रियाओं को देखते है वह संचार की ही देन है। संचार क्रिया हमारे व्यक्तिगत, सामूहिक तथा राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की उत्पन्न सभी संगतियों को भी दूर करता है इसीलिए भी देश का विकास संचार की सफल तकनीक पर ही निर्भर करता है।

संचार प्रक्रिया के सभी आवश्यक तत्वों में प्रसार विधियों का महत्वपूर्ण स्थान है। संचार

प्रक्रिया के सुनियोजित एवं उपयुक्त प्रयोग से ही प्रसार, शिक्षा कारगर रूप ले पाती है। इस संबंध में Shri A.K. Dey का विचार है। आज के युग में लाभकारी विचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने या एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को पहुँचाने तक से अधिक आवश्यक एवं लाभकारी कार्य और दूसरा कोई नहीं है। अनुसंधान केन्द्रों पर हुयी नयी खोजों का महत्व कुछ भी नहीं रह जाता है यदि वह जरूरत मंद लोगों के पास नहीं पहुँचती। यह संचार प्रक्रिया से ही संभव है। संचार प्रक्रिया के निम्नलिखित आधारभूत तत्व है –

1. SENDER प्रेषक → प्रेषक का अर्थ प्रसार कर्ता से है। एक कुशल प्रेषक को प्रसार के सभी तत्वों की प्रकृति को जानना आवश्यक होता है। इससे वे आसानी से अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सफल होते है। इस तरह यह कहा जा सकता है कि जो संचार क्रिया का शुभारंभ करता है वह प्रेषक कहलाता है। संचार क्रिया को सफल बनाने के लिए प्रेषक में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है –

amoda
comfort linen

a. उसे विषय-वस्तु के उद्देश्य, श्रोताओं, विषय-सामग्री तथा इसमें प्रयुक्त होने वाले उपयुक्त संचार माध्यम का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

b. प्रेषक को निम्नलिखित कार्यों में दिलचस्पी रखना आवश्यक है –

1. श्रोता कौन है तथा उसका कल्याण किस चीज में निहित है।
2. विषय-सामग्री को ग्रामीण जनता को अधिक से अधिक लाभकारी कैसे बनाया जाए।
3. उचीत संचार माध्यम का कौन प्रकार से उपयोग किया जाए।
4. संचार क्षमता को किस प्रकार बढ़ाया जाए।
5. शिक्षक, शिक्षण सामग्री एवं उसके मूल्यांकन हेतु योजना बनायी जाए।

2. MESSAGE संदेश → संदेश वह सूचना है जिसको प्रेषक अपने श्रोताओं तक इस ढंग से पहुँचाता है कि वे उसे समझे, अपनाए तथा उस पर अमल करें –
स्पष्ट है कि बोलते समय बोली संदेश है। लिखते समय लेखन संदेश है। पेंटिंग में तस्वीर संदेश है।
अत: संदेश पूर्ण रूप से एक

amoda
comfort linen

Scanned by TapScanner

विषय सामग्री नहीं होता। वह विषय सामग्री का सूक्ष्म - निचोड़ है। संदेश इस प्रकार का होना चाहिए जो प्राप्तकर्ता को वास्तविक, विश्वसनीय, उपयुक्त तथा समझने योग्य है। इसलिए संदेश को आवश्यकताओं पर आधारित सामाजिक स्पष्ट संचार माध्यमों के अनुकूल तथा प्रबंध के योग्य होना चाहिए।

3. CHANNEL माध्यम → संचार क्रिया का तीसरा तत्व माध्यम है। माध्यम कोई भी वस्तु हो सकती है। माध्यम, प्रेषक एवं प्राप्तकर्ता के बीच एक मौलिक पुल का कार्य करता है। माध्यम के अभाव में कोई भी संचार प्रक्रिया सम्पन्न नहीं हो सकती है।

संचार माध्यम को कार्यक्रम को सरल एवं आसानी से श्रोताओं तक पहुँचाने का होना चाहिए। समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, फिल्म, प्रदर्शन, मीटिंग आदि संचार माध्यम के कुछ उदाहरण हैं।

4. RECEIVER प्राप्तकर्ता → प्राप्तकर्ता को सक्रिय उन्मुख तथा मौलिक एवं मानसिक रूप से क्रियाशील होना आवश्यक है क्योंकि हमारे संचार क्रिया का केन्द्र बिन्दु श्रोता या प्राप्तकर्ता ही है। यह संचार का चौथा किन्तु बहुत ही आवश्यक तत्व है।

प्राप्तकर्ता का विषय सामग्री ग्रहण करने की क्षमता कई श्रोतों पर निर्भर करती है। प्रो० हाल के अनुसार ये बातें निम्न हैं -

a) प्राप्तकर्ता का सामाजिक स्तर
b) प्राप्तकर्ता की आर्थिक स्थिति
c) प्राप्तकर्ता की शैक्षणिक स्थिति

5. FEED BACK प्रतिपुष्टि → प्रतिपुष्टि का अर्थ जाँच करना है कि संचार के विभिन्न तत्व अपने उद्देश्य में सफल रहे कि नहीं।

संचार विधियाँ

COMMUNICATION APPROACHES संचार विधियाँ → संचार वास्तव में प्रसार के लिए अपनायी गयी विधियाँ या तकनीक हैं जिनकी सहायता से लोगों तक पहुँचा जा सकता है। पहुँचने का उद्देश्य लोगों में हलचल पैदा करना तथा उन्हें किसी निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरणा करना है। संचार कार्य की विभिन्न विधियाँ निम्नलिखित हैं -

1. INDIVIDHAL APPROACH व्यक्तिगत पहुँच विधि → जब संचार कर्ता एक-एक व्यक्ति से मिलकर उसको

Scanned by TapScanner

समस्याओं के बारे में विस्तृत जानकारी लेता है तथा व्यक्तिगत तौर पर अपने विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में उसे अवगत कराता है, तो इस विधि को व्यक्तिगत पहुँच विधि कहते हैं। इस विधि के लिए संचार कर्ता को व्यक्तियों के व्यक्तिगत प्रेरक की अच्छी जानकारी आवश्यक है। व्यक्तिगत पहुँच विधि की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि संचार कर्ता 1. ग्रामीणों या लोगों की रुचियों को पहचान सके।

2. यह मालूम कर सके कि ग्रामीण नेतृत्व एवं अन्य कार्यों के लिए किसे महत्वपूर्ण समझते हैं। (3) ग्रामीणों की समस्याएँ मालूम करने तथा उसके हल करने में रुचि रखें।

4. ग्रामीणों एवं अपने स्वयं में सीखने की उत्कंठा उत्पन्न कर सकें।

व्यक्तिगत के अनेक लाभ हैं जो निम्न हैं:-

a. इस विधि के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति की समस्याओं एवं क्रिया कलापों का विस्तृत ज्ञान हो जाता है जिसके आधार पर कार्यक्रम बनाए जा सकते हैं।

b. इस विधि से प्रसारकर्ता में आत्मविश्वास बढ़ते हैं।

c. व्यक्तियों के साधनों एवं क्षमता का पता चलता है जिससे कार्यक्रम चलाने में आसानी होती है।

d. इस विधि के द्वारा प्रसारकर्ता अच्छे नेता का चुनाव करने तथा उनसे अच्छे संबंध बनाने में समर्थ होते हैं।

e. यह विधि लोगों की रुचि, दृष्टिकोण तथा ज्ञान का पता लगाने में सहायक है।

f. व्यक्तिगत पहुँच के कारण आपस में समझ विकसित होती है।

g. कार्य में लोगों की रुचि जाग्रत होती है।

h. अन्य विधियों की तुलना में इस विधि के द्वारा आशाएँ अधिक पूर्ण होती हैं।

व्यक्तिगत पहुँच विधि कई तरह हो सकते हैं —

1. घर या खेत पर व्यक्तियों से मिलना, व्यक्तिगत पत्र लिखकर या टेलीफोन पर सम्पर्क स्थापित करना।

इन गुणों के बावजूद व्यक्तिगत पहुँच विधि का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसमें समय एवं धन का अधिक खर्च होता है। इस कारण कार्यक्रम में मितव्ययिता बरतना सम्भव नहीं हो पाता है।

~~3. ग्रामीणों की समस्याएँ मालूम करने तथा उसके हल करने में रुचि रखें।~~

amoda
comfort linen

amoda
comfort linen

GROLIP APPROPCH (सामूहिक पहुँच) →

जब संचारकर्ता दो या दो से अधिक व्यक्तियो के साथ समूह में मिलता है तो इसे मिलने की प्रक्रिया को सामूहिक पहुँच करते है। स्पष्ट है कि इस विधि के द्वारा दो या अधिक व्यक्तियो के समूह में प्रसार किया जाता है। ग्रामीण विकास कार्य में सामूहिक पहुँच विधि का विशिष्ट स्थान है। इस विधि की सफलता निम्नलिखित बातों पर निर्भर करती है।

a जिस समूह के साथ काम करना है। उसकी पूरी जानकारी करना।
b उस समूह का नेतृत्व किस प्रकार का है।
c समूह की विशेष रुचि क्या है।

सामूहिक पहुँच विधि के अनेक लाभ है जिनमे निम्नलिखित प्रमुख है।

1. इस विधि के द्वारा कम समय में ही अधिक से अधिक लोगो को प्रभावित किया जा सकता है।
2. समूह किसी बात को जल्दी सीखता है।
3. समूह द्वारा तय की हुई बात स्थायी होती है।
4. इस विधि के द्वारा सभी की बातो पर ध्यान दिया जाता है।

इस विधि का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति की अलग - अलग समस्याओं की जानकारी एवं निदान नहीं हो पाती है।

सामूहिक पहुँच विधि को कई तरिको से लागू किया जा सकता है। इसमें निम्न प्रमुख है।

a. METHOD DEMONSTRATNON (विधि प्रदर्शन) →

इस विधि के अन्तर्गत व्यक्तियों के - एक समूह को यह कर के दिखाया जाता है कि किसी नही प्रणाली को कैसे किया जाता या किसी पुरानी कार्य प्रणाली को और अच्छे तरिके से कैसे किया जा सकता है।

b. RESOLT DEMONSTRATION (परिणाम प्रदर्शन) →

इसमें लोगो को किसी कार्य - प्रणाली का मूल्यवान उपयोगिता दर्शाया जाता है। इस विधि में परिणाम पर बल दिया जाता है तथा परिणाम बताकर इस कार्य प्रणाली की उपयोगिता समझायी जाती है।

c. COMPOSITE DEMONSTRATION (संयुक्त प्रदर्शन) →

amoda comfort linen

इस विधि में दोनो ही पद्धति या परिणाम का समावेश होता है। राष्ट्रीय प्रदर्शन इसका ज्वलंत उदाहरण है।
स्पष्ट है कि प्रदर्शन विधि से जनता को विभिन्न कार्यविधियों के प्रति विश्वास पैदा हो जाता है क्योंकि वे स्वयं कार्य करके उसके परिणाम को देख लेते हैं।

2 TRAINING OF LEADERS (नेताओं का प्रशिक्षण) :→ इसके अन्तर्गत नेताओं को उपयुक्त विधि के संबंध में प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे नेतागण पहले अपने खेतों में इसका उपयोग कर अन्य व्यक्तियों को प्रशिक्षित एवं उपयोग के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

3 विचार विमर्श सभा :→ इसके अन्तर्गत विचार विमर्श सभाएं आयोजित कर कृषक अपनी समस्याएं पेश करते हैं तथा वहीं विचार विमर्श द्वारा समस्या के हल भी सुलझा लिए जाते हैं विचार निम्नलिखित प्रकार के होते हैं।

a. Group Discussion सामूहिक विचार विमर्श
b. नामिका विचार विमर्श
c. परिसंवाद
d. वादपीठ
e. सामूहिक साक्षात्कार
f. संवाद या जन वार्तालाप
g. कार्यशाला

3. MASS APPROACH (जन पहुंच विधि) :→

यह विधि बहुत ही प्रचलित विधि है। यह विधि कम खर्चीली होती है। इस विधि से अधिक से अधिक लोगों को प्रभावित किया जा सकता है तथा इसमें समय भी कम लगता है। जन पहुंच विधि के अन्तर्गत निम्नलिखित विधियों को शामिल किया जाता है।

a. सिनेमा तथा स्लाइड्स
b. फ्लैश कार्ड
c. मुद्रित सामग्री
d. प्रदर्शन वस्तु एवं मॉडल
e. रेडियो
f. रिकॉर्ड की गयी वार्ता
g. चार्ट एवं चित्र
h. परिपत्र
i. समाचार पत्र एवं कहानियाँ
j. अभियान
k. टेलीविजन

प्रसार शिक्षा का सिद्धांत :→ प्रसार शिक्षा के विभिन्न सिद्धांत निम्नलिखित हैं।

(1) हित एवं आवश्यकता का सिद्धांत :→ प्रसार शिक्षा प्रसाधन अथवा मूल्य रूप में ग्रामीणों के हितों एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति से सम्बंधित होती है इस में यह उनके शादीक महत्वपूर्ण हितों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति पर विशेष बल देती है। तथा उनके सदर्भ में प्राथमिकता के आधार पर कार्यक्रम नियोजित करती है फलत: अगर कभी ऐसी परस्थिति उत्पन्न होती है उस गाँव में चलाये जा रहे प्रसार कार्यक्रम के सदर्भव में किसी प्रकार दृष्टी कोण अन्तर उत्पन्न हो तो ग्रामीण के मत या दृष्टी कोण को भी प्रमाणित माना जाएगा। प्रसार अधिकारी या दृष्टी कोण को ही माना होगा। प्रसार कार्यकर्ता को उन हितों एवं आवश्कताओं को मान्यता एवं प्राथमिकता देनी होगी। जिन्हे ग्रामीण अपना हित एवं अपनी आवश्यकता मानते हैं। क्योंकि ये हित एवं आवश्यकताऐ ग्रामवासीयो की अपनी आवश्यकताऐ होती है।

(2) सांस्कृतिक विभिन्नता का सिद्धांत → भारत गांव का ~~देश~~ देश होने के साथ-साथ विभिन्न संस्कृति का भी देश है। जहाँ विभिन्न संस्कृतियाँ अति प्राचीनकाल से अस्थापित

amoda
comfort linen

में बनी हुई है। अत: प्रचार शिक्षा के सदर्भ में यहाँ इस बात की शारदीक आवश्यकता है कि जहाँ वर्तमान संस्कृति कि भिन्नता को दृष्टि, बिन्दु में रखते हुए। प्रसार शिक्षा के स्वरूप एवं उनकी संरचना का निधारण किया जाए। इस देश में एक ही स्वरूप एवं सरचना वाले प्रसार शिक्षा कार्यक्रम को देश के भिन्न संस्कृतियों वाले विभिन्न क्षेत्रों में समान्य सफलता के साथ लागू नहीं किया जा सकता है। भिन्न संस्कृतियों वाले क्षेत्रो में वहाँ की संस्कृति के अनुरूप निरूपित पर निर्धारित कार्यक्रम लागू किया जाना आवश्यक है।

(3) सांस्कृतिक परिवर्तन का सिद्धांत → प्रसार शिक्षा कार्यक्रम को इस प्रकार निरूपित एवं निधारित किया जाना चाहिए। जिससे वे प्रयाप्त रूप से प्रभावित हो सके प्रभावी होने से तात्पर्य यह है कि वे वैसा हो जो लागू किया जा सके और उस क्षेत्र के जिस क्षेत्र में वे लागू किये जा रहे हो सास्कृतिक स्वरूप में ~~उत्तल~~ उत्तेजाजी, गतिशील एवं विकासात्मक परिवर्तन ला सके। प्रसार शिक्षा कार्यक्रम की सफलता इसी में निहित होती है कि जिस क्षेत्र में वे लागू किये जाऐ। उस क्षेत्र की जनता के रहन-सहन का स्तर उच्चा उठे उस क्षेत्र के लोगों की कार्यकुशल एवं कार्यक्षमता में वृद्धि हो उस क्षेत्र का आर्थिक विकास हो और इस तरह उस क्षेत्र की जनता का आर्थिक विकास हो वहाँ की

amoda
comfort linen

जनता का सामाजिक, सांस्कृतिक पर्यावरण में विकासात्मक परिवर्तन हो।

(4) शिक्षण विधियों के उपयोग में अनुकूलन का सिद्धांत → औपचारिक एवं संस्थागत व्यवस्था में विद्यार्थियों को संस्था के नियमों एवं उनके शिक्षण नियमों एवं उनको पर्यावरण के अनुकूल बनाया जाता है अथवा उनके साथ सामंजस्य स्थापित करना होता है जैसे किसी संस्था, विद्यालय में किसी विषय के वर्ग सप्ताह के निश्चित दिन को निश्चित अवधि व्यवस्थित होता है। अब उन्हें इस विषय की कक्षा आयोजित करनी ~~पड़ती~~ होती है तथा जिसे इस विषय की आयोजित कक्षा में बैठना पड़ता है। उन्हें इस कार्यक्रम के अनुकूल व्यवस्था करनी होती है। प्रसार शिक्षा में सामान्यतः ऐसा नहीं होता है, यह शिक्षा की अनौपचारिक और गैर संस्थागत विधि है प्रसार शिक्षा से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारी को अपना कार्यक्रम ग्रामीणों की सुविधा, उनकी आवश्यकता, स्थानीय परिस्थितियों एवं गाँव के परिवेश एवं पर्यावरण के अनुकूल चलाना होता है। पुनः उन्हें अपने कार्यक्रम के इस प्रकार व्यवस्थित करना होता है। जिससे वह विभिन्न बौद्धिक स्तर वाले ग्रामीणों के लिए उपयुक्त हो सके। कुल मिलाकर प्रसार शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण प्रशिक्षण विधियों को ही शिक्षण प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले के अनुकूल नियोजित करना पड़ता है।

(5) जनता के स्तर पर संगठन का सिद्धांत → प्रसार शिक्षा के समस्त कार्यक्रमों का नियोजन संगठन नियंत्रण एवं मूल्यांकन जनता के स्तर पर किया जाना चाहिए। प्रसार शिक्षा के कार्यक्रमों का निर्माण जनता विशेष रूप से ग्रामीण जनता के विकास एवं कल्याण के लिए होता है। फलतः इस कार्यक्रम के नियोजन संगठन, नियंत्रण एवं मूल्यांकन में इनकी प्रत्यक्ष सक्रिय भागीदारी होनी चाहिए। प्रसार कार्यक्रमों को इस प्रकार नियोजित एवं आयोजित किया जाना चाहिए। जिसे जनता को यह प्रतीत न हो कि जनता को लगे कि ये कार्यक्रम उनके ऊपर लादे गये हैं। बल्कि उनको विश्वास होना चाहिए कि ये कार्यक्रम मात्र उनके लिए ही नियोजित किये गये हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि इस कार्यक्रमों की रूपरेखा इनके बीच बैठकर अथवा उनकी सहयोग से बनाये जा सके। जिनके लिए वे बनाये जाते हैं। एक गाँव में विभिन्न स्तर के व्यक्ति या व्यक्ति समूह हो सकते हैं। अगर प्रसार शिक्षा कार्यक्रम

amoda comfort linen
amoda comfort linen
Scanned by TapScanner

इन सब की भागीदारी और सहायता से नही बनाया जाए तो सम्भव है कि इन में इनके हितो को समाहित नही किया जाता है।

⑥ सहकारिता एवं सहयोग का सिद्धांत → प्रसार शिक्षा तंत्र पुन सहकारीता पर आधारित होता है। प्रसार शिक्षा कार्यक्रम प्रधानतः जनकल्याण एवं विकास पर आधरित कार्यक्रम होते है। अतः इन कार्यक्रमो के सफल निष्पादन एवं उन से सार्वाधिक सम्भव लाभकारी परिणाम प्राप्त करने में सम्भव प्रयत्न होता है। इस कार्यक्रमो के लिए आवश्यक नियोजन, संगठन मूल्यांकन एवं पूर्ण नियोजन प्रसार, विषय, वस्तु विशेषज्ञ प्रसार कार्यकर्ता तथा जनता सभी सहकारिता के आधार पर मिलजुल कर पारस्परिक हितो को ध्यान मिलकर कार्य करते है। इस सहकारीता के अभाव में प्रसार शिक्षा के कार्यक्रम को प्रभावित ढंग से किया जाना चाहिए। सहकारीता या सहयोग की भावना प्रसार शिक्षा की आत्मा होती है।

amoda
comfort linen

⑦ समान्वय स्थापित करने का सिद्धांत → प्रसार शिक्षा के कार्यक्रम जनता विशेषकर ग्रामीण जनता के उत्थान एवं विकास के लिए चलाये जाते है। इन कार्यक्रमो के नियोजन संगठन नियंत्रण एवं मूल्यांकन एवं पूर्ण नियोजन में एक ओर से प्रसार वैज्ञानिक प्रसार विषय वस्तु विशेषज्ञ प्रसार शिक्षक एवं प्रसार कार्यकर्ता का तथा दूसरी ओर से स्थानीये नेता का तथा जनता का योगदान रहता है। प्रसार कार्यकर्ताओ स्थानीये नेताओ एवं जनता के इस समूह में विभिन्न बौद्धिक आर्थिक सामाजिक एवं पारिवारिक स्तर वाले व्यक्ति रहते है इसके व्यक्तिगत हितो मे व्यापक अन्तर हो सकता है। इसके व्यक्तिगत पसन्द या पसन्द में भी व्यापक अन्तर हो सकता है पर प्रसार शिक्षा को सफलता पूर्वक सफल किया जा सके। इसके लिए ये आवश्यक है कि सभी अपनी - अपनी हितो एवं अपने पसन्द या न पसन्द को समूह के बीच में रखे बीना पारस्परिक ~~समाज~~ समन्वय के प्रसार शिक्षा कार्यक्रम को प्रभावित रूप से कार्यक्रम नही किया जा सकता है।

⑧ समानता एवं सामूहिक दायित्व का सिद्धांत → प्रसार शिक्षा का शारीरीक महत्वपूर्ण उद्देश्य ग्राम जन जीवन का सर्वांगिक (हितकर) विकास करना इस लक्ष्य की शारिरीक सन्तोषजनक उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है जब

amoda
comfort linen

Scanned by TapScanner

प्रसार कार्यकर्ता स्थानीय नेता तथा जनता के बीच समानता एवं सामूहिक दायित्व के स्तर पर भागीदारी हो कार्यक्रम को पुन सफल एवं उपयोगी बनाने के लिए हर किसी को इसकी सफलता का दायित्व समान रूप से वहन करना होगा।

(9) करो और सीखो का सिद्धांत → स्वयं कार्य करते समय सीखने की प्रक्रिया शिक्षण एवं प्रशिक्षण की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह त्वरित एवं स्थानीय परिणाम देने वाली प्रक्रिया है प्रसार शिक्षा कार्यक्रमो इस विधि का सार्वाधिक उपयोग किया जाता है। ग्रामीण इसके कार्यक्रम जनता विशेष रूप से कृषक जनता स्वयं कार्यक्रमो कि विभिन्न प्रक्रियो का निष्पादन करती है ग्राम जन-जीवन मे विकासात्मक परिवर्तन लाना इस कार्यक्रम को प्राप्त करने के लिए किये जाने वाले प्रयास के क्रम वे सीखते ही जाते है।

(10) प्रजातंत्र एवं व्यवहार विज्ञान का सिद्धांत → प्रजातंत्र व्यक्ति सार्वाधिक महत्वपूर्ण होता है अभिव्यक्ति को स्वतंत्रता होती है प्रसार शिक्षा के कार्यक्रम मे इन्ही सिद्धातो पर चलाये जाते है। प्रसार शिक्षा कार्यक्रम भाग लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह प्रसार अधिक या कार्यकर्ता हो अथवा ग्रामीण जनता या स्थानीय नेता महत्वपूर्ण होता है

प्रसार शिक्षा के तहत चलाये जा रहे किसी भी कार्यक्रमों में इन्हे अपने विचारो का अभिव्यक्त करने की महत्वपूर्ण स्वतंत्रता होती है इस शिक्षा व्यवस्था के तहत शिक्षक एवं शिक्षकाओ के बीच विचारो का खुला आदान प्रदान होता है यह एक दिमागी शिक्षा व्यवस्था होती है। इस में ग्रामीण या कृषक या अन्य कोई भी सम्बंधित व्यक्ति अपनी समस्या को प्रसार कार्यकर्ता के समक्ष रख सकता है। प्रसार कार्यकर्ता उसे प्रसार विशेषज्ञ या प्रसार वैज्ञानिको तक पहुच कर उसे उनका समाधान प्राप्त कर पुन समस्या प्रस्तुत करने वाले तक पहुचा देते है प्रसार शिक्षा खेत खलीयान घर-परिवार तथा गाँव समाज से जुडा हुआ होने के कारण मूलयत एवं आधृत होती है। तथा अधिकांश व्यवहारिक शिक्षण एवं प्रशिक्षण ही देती है।

(11) नेतृत्व का सिद्धांत → ग्रामीण समाज में नेतृत्व का विकसित करना प्रसार शिक्षा का एक प्रमुख सिद्धांत है। प्रसार कार्यकर्ता का एक महत्वपूर्ण दायित्व होता है। अपने कार्यक्रम मे घुम-घुमकर नेतृत्वक्षमता से युक्त ग्रामीणो पता लगाना इनका पता चलने के बाद इसका दायित्व होता है। उन ग्रामीणो मे अन्तर्निहित नेतृत्व क्षमता का विकसित करना तथा उस आदार पर उस स्थान पर स्थानीय सत

amoda comfort linen

amoda comfort linen

Scanned by TapScanner

एवं प्रभावी नेतृत्व विकसित एवं स्थापित करना जब इस प्रकार का नेतृत्व विकसित हो जाता है तब प्रसार कार्यकर्ता का यह प्रयास होता है वह अधिक से अधिक प्रसार कार्यक्रमों को नेतृत्व से सम्पन्न कराये।

(12) सम्पूर्ण परिवार का सिद्धांत :→ प्रसार शिक्षा के कार्यक्रम सम्पूर्ण परिवार के लिए नियोजन एवं निष्पादित किये जाते हैं इस शिक्षा के कार्यक्रम में सम्पूर्ण परिवार माता - पिता उनके संतान एवं उनके सम्बंधि एवं सभी आयु वर्ग जैसे बालिक किशोर, युवा प्रौढ़ एवं वृद्ध पुरुष एवं महिला को भाग लेने का अवसर मिलता है। प्रसार शिक्षा का कोई भी कार्यक्रम ऐसा नहीं होता है कि जिसमे सम्पूर्ण परिवार एक साथ भाग नहीं ले सकता है।

(13) संतोष का सिद्धांत → प्रसार शिक्षा के सभी कार्यक्रमों का नियोजन, संगठन एवं निष्पादन इस प्रकार किया जाना चाहिए। जिससे उसमें भाग लेने वाले सभी व्यक्तियों को सर्वाधिक संभावित संतोष हो सके। इससे विभिन्न लाभ होता है। एक तो इन कार्यक्रमों से जितना अधिक संतोष भाग लेने वाले को मिलेगा उतना ही प्रसार अधिक प्रचार कार्यक्रमों का होगा तथा अधिक से अधिक लेने लगे तो दूसरी ओर अधिक से अधिक ग्रामीणों के जीवन में सुधारात्मक एक विकासात्मक हो सकेगा।

(14) मूल्यांकन का सिद्धांत → प्रसार शिक्षा कार्यक्रम के निष्पादन हो जाने के बाद इसका मूल्यांकन करने से यह पता चलता है कि कार्यक्रम किस हद तक सफल या असफल रहा अगर यह असफल रहा तो असफल का कारण क्या है उसका दायित्व क्या किस पर है और सफलता मिले तो सफलता किस हद तक मिली। तथा उस हद और से आगे भी अधिक सफलता पाने के लिए क्या किया जाना आवश्यक है।

(15) प्रशिक्षित विशेषज्ञों का सिद्धांत → प्रसार शिक्षा के सभी कार्यक्रमों का सर्वदा सफलता पूर्वक संचालन होता रहे इस के लिए आवश्यक है कि प्रसार अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रसार शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में उन विषयों से सम्बंधित प्रशिक्षित विशेषज्ञों की सेवायें निरन्तर उपलब्ध होती रहे जो इस लिए आवश्यक है कि प्रसार कार्यकर्ता जब तक स्वयं ही प्रसार से सम्बंधित जानकारी नहीं रहेगी तब तक उसे प्रसार कार्यकर्ता को सफलता पूर्वक प्रसार करने में कठिनाई होगा।

amoda comfort linen

Scanned by TapScanner

(16) सम्पूर्ण निकटता का सिद्धांत → प्रसार शिक्षा सार्वेक्षित प्रजातंत्रिक विज्ञान पर आधारित शिक्षा व्यवस्था है। इसका उद्देश्य ग्रामीण विकास लेकर राष्ट्रीय विकास तक है अतः इसकी सफलता तभी सम्भव जब इसके कार्यकर्ता एवं जनता दोनों ही इसके कार्यक्रम में मिलकर अभिरुचि से अपने अपने कामो समतिल दाइत्वो को निभाये।

(17) अस्थानीयो संसाधनो के अधिकतम उपयोग सिद्धांत → प्रसार शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यो में एक ग्रामीणो में आत्म निर्भरता एवं अपनी सहायता प्राप्त अपने आप करने की भावना इसी कारण प्रचार शिक्षा स्थानीय संसाधनो के सर्वाधिक सम्भव उपयोग के सिद्धांत जिस क्षेत्र में प्रसार काम कराती शिक्षा का कार्यक्रम चलाया जा रहा उस क्षेत्र के समस्त मानवीय एवं भौतिक संसाधनो का सर्वाधिक सम्भव उपयोग कार्यक्रम को चलाये जाने सम्भव उपयोग करना चाहिए। प्रसार कार्यकर्ता को चलाने में स्थानीय नेता से सहायता लेना चाहिए तथा उस क्षेत्र की जनता को अपनी आप सहायता करने में विकास करने में सहायता करना चाहिए ऐसा करने से उस क्षेत्र की जनता विकास अधिकतर सम्भव है।

28/11/...

समुदाय विकास कार्यक्रम के विभिन्न विद्वानो द्वारा विभिन्न प्रकार से परिभाषाएँ किया गया है इसमें कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित है।

कार्ल टेलर → समुदाय विकास वह विधि है जिसके द्वारा ग्रामवासी स्वयं अपनी आर्थिक एवं सामाजिक स्थितियो को सुधारने के उद्देश्य से चलाये जाने वाले कार्यक्रम में सहायता करने में संलग्न होते है। इस प्रकार के अपनी राष्ट्रीय विकास के कार्यक्रम में प्रभावी दल के रूप में कार्य करते है।

संयुक्त राष्ट्र → राष्ट्र के जीवन में समुदाय के आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियो को सुधारने और उन्हे एक राष्ट्रीय कार्यक्रम में पूरा-पूरा योगदान करने योग्य बनाने के लिए परिवर्तन की एक प्रक्रिया जिसके द्वारा स्वयं जनता के प्रयास सरकारी अधिकारियों के प्रयास के साथ जुड़ जाते है।

दहामा → समुदाय विकास एक व्यापक पद है। प्रायः समुदायिक हितो की पूर्ति की दिशा में किया गया कोई भी और प्रत्येक प्रयास इसकी परिधि में लाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

केम्ब्रिज सम्मेलन → ये ~~एक~~ संपूर्ण समुदाय के लिए जीवन यापन के अच्छे तरीको को अगर सम्भव हो तो समुदाय को अपनी पहल

amoda
comfort linen

amoda
comfort linen

Scanned by TapScanner

पर उन्नति करने के लिए स्वरचित किया गया एक आंदोलन है

समुदाय विकास का उद्देश्य → समुदाय विकास कार्यक्रम के कुछ मुख्य लक्ष्यों या उद्देश्यों को कई प्रकार से विभाजित किया गया है।

सामान्य या व्यापक उद्देश्य → किसी भी अन्य विकास कार्यक्रम या विकासात्मक परिवर्तन लाने के उद्देश्य से चलाई जा रही परियोजना की तरह समुदाय विकास कार्यक्रम का भी एक व्यापक या सामान्य उद्देश्य होता है समुदायिक विकास कार्यक्रम का महत्वपूर्ण उद्देश्य है भारत की विशाल ग्रामीण आबादी के वर्तमान आर्थिक तथा बौद्धिक स्तर एवं रहन-सहन के स्तर को अधिक से अधिक ऊपर उठाना 1991 की जनगणना के अनुसार भारत की नागरीय आबादी राष्ट्रीय औसत तथा ग्रामीण अबादी का अनुपात 25.72 से 74.28 है। विशाल ग्रामीण जनसंख्या के वर्तमान पारिवारिक समाजिक राजनितिक नैतिक तथा सांस्कृतिक अध्यात्मिक पर्यावरण में सर्वाधिक संभव विकासात्मक परिवर्तन लाना भारत के समुदायिक विकास कार्यक्रम का प्रमुख काम है।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम के उपयुक्त व्यापक या सामान्य उद्देश्य प्राप्ति के लिए कुछ लक्ष्यों का निर्धारिक किया गया जो निम्न है।

(1) विभाग → कृषि जन स्वास्थ्य पेय जल वितरण सह खाद्यान संरक्षण एवं भंडारण आदि जैसी विभिन्न संस्थाओं के स्तर अधिक से अधिक विकसित करना तथा उनके वर्तमान विकसित करना तथा उनके वर्तमान तकनिको को अधिक से अधिक वैज्ञानिक एवं तकनिकी स्वरूप प्रदान करना।

(2.) रहन-सहन के स्तर → रहन-सहन के स्तर पशु धन के स्तर तथा पैदावर के स्तर को अधिक से अधिक को ऊपर उठना पशु पालन तथा कृषि के क्षेत्र में उपलब्ध सार्वाधिक उन्नत एवं वैज्ञानिक तकनिको पर उपकरणो का प्रयोग करना।

(3) समुदाय विकास → कार्यक्रम के तहत उपयुक्त उद्देश्यों या लक्ष्यों को सम्पूर्ण ग्रामीण जनसंख्या के लिए प्राप्त करना अर्थात उपयुक्त लक्ष्यों की प्राप्ति से मिलने वाला लाभ सभी ग्रामवासीयो यानि पुरुष महिला युवा युवती बालक तथा बालिकाएँ आदि को समान रूप से उपलब्ध करना।

(4) सदस्य या प्रत्येक ग्राम → वासी क्षेत्रीय ग्रामीण नेता समुदाय विकास कार्यक्रम के अधिकारी एवं कार्यकर्ता तथा ग्राम स्तर कार्य कर्ता। ~~समुदाय विकास~~

समुदाय विकास कार्यक्रम का क्षेत्र → समुदाय विकास इस कार्यक्रम के क्षेत्र बड़ा ही विविध व्यापक है व्यापक एवं अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण

amoda comfort linen

Scanned by TapScanner

विश्व इसका क्षेत्र है क्योंकि समुदाय विकास का तत्पर समुदाय विकास से है तथा ये मानव समुदाय संपूर्ण रूप में व्यापक है प्रत्येक रूप या सिमित रूप से समुदाय विकास कार्यक्रम क्षेत्र का तात्पर्य अविकसित एवं विकसित मानव समुदाय के विकास के कार्यक्रम चलाने से है। विश्व के संपूर्ण जनसंख्या लगभग 80% आर्थिक एवं शैक्षिक रूप विकृत मानव समुदायका आर्थिक एवं औरसी रूप से पिछड़ा हुआ ये वर्ग प्रधानता विश्व के दक्षिण ~~पूर्व~~ पूर्व एशिया मध्य पूर्व ~~में~~ क्षेत्र में रहता है।

31/1/14 स्वयं हमारे देश मे योजना एवं कार्यक्रम के भूतपूर्व मंत्रि H.R भरदवाज ने राज्य सभा मे बताया कि देश मे 400 लाख लोग गरीबी रेखा के नीचे है। समुदाय विकास कार्यक्रम विशेष रूप से ऐसे मानव समुदाय के ही विकसित करने आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर को ऊपर लाने तथा अनेक रहन-सहन के स्तर को बेहतर बनाने के लिए ये कार्यक्रम चलाये जाते है। विश्व में विकसित एवं समृद्ध राष्ट्रों (जैसे - अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी और इंग्लैंड) विकसित तथा विकाशील राष्ट्र (जैसे - भारत, पकिस्तान बंगला देश और नेपाल) विकाशील राष्ट्रों के जनता के रहन-सहन के बीच बहुत बड़ा अन्तर है। समुदाय विकास कार्यक्रम के अन्तर को दूर करने के लिए बनाये जाते है इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या के दृष्टि कोण से भी इसका क्षेत्रफल अत्यधिक व्यापक है

समुदायक विकास कार्यक्रम समुदाय के सदस्यो के जीवन के लगभग सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सुधारात्मक एवं विकासात्मक परिवर्तन लाये जाते है। इन कार्यक्रम के नियोजन, संगठन नियंत्रण इस प्रकार किया जाता है। जिसे समुदाये के सदस्यो का पारिवारिक एवं समुदायक के पर्यावरण अधिक से अधिक उत्तम बनता है। कार्यक्रम अनेक जीवन स्तर तथा आर्थिक एवं शैक्षिण स्तर को उच्चा उठाने में उल्लेखनीये सहयोग प्रदान करते है। ये कार्यक्रम उनमे राजनैतिक तथा राष्ट्रीये चेतना जगारीत करते है। कार्यक्षेत्र के दृष्टि कोण से इसका क्षेत्र अधिक व्यापक है।

अधिकांश अविकसित या अर्धविकसित राष्ट्रयो या विकाशील राष्ट्रीयो में समुदायक विकास कार्यक्रम ~~सह~~ राष्ट्रीये स्तर पर चलाये जाते है। ये कार्यक्रम केन्द्रीय स्तर पर राज्य स्तर या प्रान्तीये स्तर द्वारा चलाये जाते है। राष्ट्र स्तर एवं केन्द्रीये मंत्री मंडल में समुदायक विकास ~~में~~ के लिए भी मंत्री एवं मंत्रालय भी हुआ करते है। तथा इनके कार्यक्रमो के नियोजन संगठन नियंत्रण एवं मुल्यांकन को क्रियाऐ पूर्णत संरकार द्वारा किया जाता है इनके सफल निष्पादन के लिए अर्धसरकारीय संस्थाये है। अर्धसरकारी तथा गैरसरकारी संस्थाये है। इसके अतिरिक्त समुदायिक विकास कार्यक्रम की सफलता मे समुदाय इसके लिए कार्यक्रम लागू किये जाते है कि समुदायक

amoda
amoda
comfort linen

विकास का सम्पर्क क्षेत्र भी व्यापक होता है।

प्राचीन भारतीय गाँव काला से अत्यधिक विकासित एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न हुआ करते थे पर भारत में मुगल समाज से लेकर होने तक की अवधि में इन गाँव की कार्य व्यवस्था पूर्णता बिखर गई। तथा इनका प्रजातांत्रिक स्वरूप भी नष्ट हो गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने इस गाँव को फिर से प्रगति के मार्ग पर ले गये। विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं को भी चलाया गया। समुदायिक विकास कार्यक्रम योजना इन्हीं प्रयोजनाओं में एक है। गाँव में दिन हीन व्यवस्था में सुधार एवं विकासात्मक परिवर्तन लाना। गाँव को पूर्ण निर्माण करना। उन्हें राष्ट्र के विकास की धारा से जोड़ना। इसे एक बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कई छोटे - छोटे उद्देश्य (जैसे समस्त उपलब्ध समाधानों का सार्वधिक लाभप्रद उपयोग करना तथा जनता के बीच सहायता प्राप्त करने की जागृत करना इस लक्ष्य के दृष्टि कोण से समुदायिक विकास क्रम का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है।

समुदायिक विकास कार्यक्रम की प्रक्रिया → जिन प्रक्रियाओं से समुदाय कार्यक्रम को गुजरना पड़ता है वे निम्नलिखित हैं :—

1. समुदाय के साथ संबंध स्थापित करना → समुदाय विकास कार्यक्रम समुदाय के विकास के लिए समुदाय के ~~सदस्य~~ सदस्यों के सक्रिय एवं प्रभावि सहयोग से एवं समुदाय विकास पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता के सम्मिलित प्रयास से चलाये जाते हैं। यह कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न किया जा सके। इसके लिए यह आवश्यक है कि इसे नियोजित एवं संचालित किये जाने वाले पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ता व समुदाय या ग्रामीण जनता जिनके लिए तथा जिसके सहयोग से ये कार्यक्रम चलाया जाएगा। उसके बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित हो। ऐसा होने पर इन दो पक्षों के बीच विचारों की स्वतंत्रता अधिक स्पष्ट हो सकेगी। आवश्यकताओं एवं उनकी पूर्ति के संबंध में परामर्श तथा समस्याओं एवं उनके समाधानों का खुला आदान-प्रदान इन दोनों पक्षों के बीच तब सरलता से सहजता पूर्वक हो सकेगा। समुदाय विकास कार्यक्रम की सफलता के लिए इन दोनों पक्षों के बीच व्यक्ति से व्यक्ति का संबंध स्थापित होना चाहिए। समुदाय विकास कार्यक्रम के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के बीच घनिष्ठ होना चाहिए। तभी ग्रामीण जनता की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं उनकी समस्याओं का समाधान शीघ्रता से हो सकेगा।

amoda comfort linen
amoda
Scanned by TapScanner

2 समस्याओ एवं आवश्यकताओ की जानकारी प्राप्त करना → समुदाय विकास का कार्यक्रम की सफलता बहुत हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि समुदाय कि समस्या या आवश्यकताओं की पहचान किस सीमा तक की जाती है समुदाय विकास कार्यकर्ताओं विशेष रूप से ग्राम स्तर के कार्यकर्ता का यह कर्तव्य एवं उत्तरदाईत्व होता है। कि वे ग्रामवासियो से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर उनकी सभी आवश्यकताओं एवं समस्याओं की सही - सही जानकारी से उन्हे यथा शीघ्र उन पदाधिकारियो को अवगत करना होगा। जिसके ऊपर विकास कार्यक्रम नियोजन करने का दाइत्व होता है ये पदाधिकारी तब इस ज्ञान के आधार पर ऐसे विकास कार्यक्रम का नियोजन करेगें जो ग्रामीणो की उन आवश्यकताओ की पूर्ति एवं उनकी समस्या के समाधान के लिए त्वरीत गति से सहायता सहयोग उपलब्ध करायेगे। ऐसे विकास कार्यक्रम ग्रामीण जनता के आवश्यकता कि पूर्ति एवं समस्याओं के समाधान में सहायक होगे तथा ग्रामीणो के बीच लोकप्रियता होगे ऐसे कार्यक्रमों में अधिक से अधिक संख्या में ग्रामीण सक्रिये एवं प्रभावी रूप भाग लेगे। इस प्रकार समुदाय विकास कार्य क्रम का प्रमुख उद्देश्य पूरा होगा।

वस्तु स्थित की विवेचना व्याख्या करना → समुदाय के सदस्यो एवं ग्रामीणो जनता को वस्तु स्थिति से अवगत करना। समुदाय विकास

कार्यक्रम कि सफलता के लिए आवश्यक है ग्रामीण स्तर की कार्यकर्ता को उन्हे समझना होगा की वे किन परिस्थिति में रह रहे है उनके लिए आदर्श परिस्थियाँ क्या होगी। देश अन्य विभिन्न भागो मे तथा विदेशो में इन के समक्ष ग्रामीण किन परिस्थितियो में रह रहे तथा समुदाय विकास कार्यक्रम की सहायता से या उनकी तरह उनकी वर्तमान परिस्थितियो में किस सीमा तक सुधार किया जा सके तथा विकासात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

4. कार्यक्रम एवं परियोजना नियोजन करना → समुदाय विकास कार्यक्रम के कुशल एवं सफल निष्पादन तथा निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए इन विकास कार्यक्रमों एवं परियोजनाओं को नियोजित करते समय अथवा उनके स्वरूप को निरूपित करते हुए निम्नलिखित बिन्दु पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

(A) समुदाय विकास के लिए कार्यक्रमों एवं प्रयोजनाओं के स्वरूप निर्धारित की प्रक्रिया में उन ग्रामीण समुदाय जिनके लिए ये कार्यक्रम या परियोजना चलाइ जाती है। सदस्यों का सम्मिलित होना आवश्यक है। ऐसे होने पर कार्यक्रम एवं परियोजना को पूर्णत: उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सकता है एवं उनकी आवश्यकताओं के समाधान में समक्ष स्वरूप प्रदान किया जा सकता है। ऐसे कार्यक्रमों या परियोजनाओं उनके बीच।

amoda comfort linen
amoda comfort linen

Scanned by TapScanner

लोकप्रिय होगा। ये उन्हें सहज होगा। अतः उनके बीच सरलता एवं सहजता से निष्पादन किया जा सके।

(B) कार्यक्रम एवं परियोजनाओं की आधारिये संरचना बनाते समय ग्रामीणों समुदाय कि समस्त आवश्यकताओं उनकी आशाओं आंकाक्षाओं हितो एवं समुदाय को दृष्टि पद में रखना आवश्यक है। किसी भी प्रकार के संरचना उनके परिक्षेपण मे ही तैयार की जानी चाहिए। इस प्रकार निर्मित संरचना ही समुदाय के लिए सार्वधिक लाभप्रद होगा।

(C) समुदाय विकास कार्यक्रम को क्रमबद्ध एवं योजना बद्ध रूप से तैयार किया जाना चाहिए। इन कार्यक्रमों एवं योजनाओं के लिए कार्ययोजना नियोजित करते समय इस कार्य योजनाओं को कार्यवृत करने का दायित्व जिन कार्यकर्ताओं पर सौंपा जाना है उनकी कार्यक्षमता एवं योग्यता वह भूगौलिक परिस्थितिया जिन्हें काम करना है।

(D) सामान्य वार्षिक कार्यक्रम योजना बनाना ही सुविधाजनक एवं लाभप्रद होता है पर कार्यक्रम योजना को किये जाने वाले कार्यक्रम की प्रकृति के अनुरूप ही बनाना चाहिए। कार्य की प्रकृति के अनुरूप साप्ताहिकी, वार्षिक या मासीक योजना भी बनाया जा सकता है।

amoda
comfort linen

(E) विकास कार्यक्रम योजना चाहे साप्ताहिक हो, वार्षिक हो चाहे मासीक हो इसे तो वास्तविकता से होना चाहिए न ही इसे अल्पकालिन होना चाहिए। प्रयास किया जाना चाहिए की इसमें वास्तविक या कल्पनात्मकता का संतुलन सम्मिलित हो। कठोर वर्तमान के यर्थाति पर आधृत एवं सुखद भविष्य की कल्पना से युक्त विकास कार्यक्रम योजना होना चाहिए।

(F) विकास कार्यक्रम योजनाओं का निर्धारण करते समय पहले की परिस्थिति, तटकालिन परिस्थिति तथा उसमें सुधार एवं विकास होने की सम्भावनाओं, समस्त उपलब्ध साधन तथा इन संसाधनो को लाभप्रद उपयोग में लाने की क्षमता का विश्लेषण विवेचना को लेना आवश्यक है।

9/12/- लघु एवं दृढ्व

अल्पकालिन योजना : → इस योजना के अंतर्गत ऐसी आवश्यकताओं एवं समस्याओं जिनकी पूर्ति एवं जिनका सामाधान सिघ्र करना आवश्यक होता है के लिए विकास कार्यक्रम किये जाते है। उदाहरण के लिए आर्थिक या समाजिक समस्या के सामाधान के लिए अल्पकालिन ऐसी योजना प्राय गाँव में किसी समय अचानक उत्पन्न किसी समस्या के सामाधान अथवा किसी आवश्यकताओं की पूर्ति अथवा किसी आपात कालिन स्थिति के लिए निपटाने के लिए बनाई जाती है। ऐसे गाँव में अचानक बाढ़ आ जाने की स्थिति बिमारी फैलने अग्निकांड हो जाने अति वृष्टि या अनावृष्टि होने आदि से उत्पन्न समस्या गाँव को निकटम स्टेशन से जोड़ने के लिए अच्छी पक्की सड़क आवश्यक गाँव में कुट -पाट

amoda

Scanned by TapScanner

या चोरी आदि की घटनाओं में भारी वृद्धि होने की स्थिति में गाँव की सुरक्षा मजबूत होने की आदि।

Longterm Planing
दूरगामिक योजना :→ ऐसी विकास कार्यक्रम योजना समानता समुदाय या गाँव की आधारिये या मूलभूत आवश्यकतो के समाधान एवं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाई जाती है ऐसी विकास योजना प्रधानता रोटी कपड़ा और मकान की समस्या या आवश्यकताओं के समाधान या पूर्ति से जुड़ी होती है। गाँव के सभी के लिए पर्याप्त संतुलित आहार की व्यवस्था करने की आवश्यकता एवं व्यवस्था सभी के लिए समुचित एवं पर्याचित व्यवस्था की आवश्यकता एवं समस्या। सभी के लिए रोजगार प्रबंध करने की आवश्यकजन स्वस्थ पेयजल, चिकित्साइ, संचार एवं परिवहन आदि की संतोष जनक व्यवस्था करे की आवश्यकता की पूर्ति एवं समाधान के लिए समान्यत दूरगामि योजना बनाई जाती है।

दूरगामि योजनों का निर्धारण
संरचनात्मक या क्रियात्मक स्वरूप अथवा दोनो के मिश्रित स्वरूप के आधार पर किया जाता है।
संरचनात्मक दूरगामि समुदाय विकास कार्यक्रम योजना एक समानता समुदाय के संपूर्ण समाजिक आर्थिक स्वरूप में विकासात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करती है। क्रियात्मक दूरगामि समुदाय विकास कार्यक्रम योजनाएं सामान्यता समुदाय द्वारा की जाने वाली क्रियाओं में उत्कृष्टता लाने का प्रयास करती है यह भी सत्य है कि इन दोनो प्रकार की योजनाओं के मध्यम को स्पष्ट एवं परिभाषित विभाजन रेखा नहीं खिची जा सकती है। संरचनात्मक योजनाएँ क्रियात्मक योजनाएँ संरचनात्मक प्राकृतिक हो सकती है तथा ये दोनों प्रकार की योजनाएँ परस्पर परिवर्त निर्भर होती है।

समुदायिक विकास कार्यक्रम में अल्पकालिन योजना एवं दूरगामि योजनाओं का संतुलित मिश्रण होना चाहिए।

जनता की सक्रिय एवं प्रभावित भागीदारी प्राप्त करना → समुदाय का विकास समुदाय के सक्रिय एवं प्रभावि सहयोग के आधार पर करने के चिन्त पर आधारित है। ग्राम समुदाय के सदस्यों का जागरूक सक्रिय एवं प्रभावि सहायता सहयोग प्रदान करना इन कार्यक्रमो के सफल एवं कुशल निष्पादन के लिए आवश्यक होता है। इस सहायता सहयोग को प्राप्त करने के प्रयास में निम्नलिखित सहायता है

1. समुदाय विकास कार्यक्रम की योजना, संगठन, नियंत्रण तथा मूल्यांकन आदि जैसे विभिन्न पहलुओं से संबंधित विभिन्न अधिकारियाँ समितिया विभिन्न समुदाय के विभिन्न सदस्यों को प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाना। ऐसे होने से समुदाय की आवश्यकताओं एवं समस्याओं में अधिकारियो के समक्ष स्पष्ट प्राप्त होगा।

amoda comfort linen

Scanned by TapScanner

2. ग्रामीण समुदाय के सदस्यों की गैर सरकारी या गैर अधिकारी प्रतिनिधि समितियां स्थापित की जाए। इन समितियों तथा कृषक समिति, महिला समिति, युवा मंडल तथा सरकारी समिति आदि सदस्यों को समुदाय विकास कार्यक्रम के नियोजन से लेकर मूल्यांकन तक के सभी चरणों में सक्रिय एवं प्रभावी भूमिका निभाने का अधिकार एवं मौका प्रदान किया जाना चाहिए तथा इनके भावनाओं विचारों एवं परामर्शों को महत्वपूर्ण मानना चाहिए।

3. समुदाय के विभिन्न हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले विभिन्न ग्राम समितियां भी इसी आधार पर स्थापित कि जा सकती है। ग्राम समाज के विभिन्न वर्गों में जैसे (महिला, महिला वर्ग, युवा वर्ग, भूमि हिन, श्रमिक वर्ग आदि) का समुचित प्रतिनिधित्व होना चाहिए।

4. इन समितियों के सदस्य गण समिति के दायित्व का भलिभांति निर्वाह करने में तथा समिति के उद्देश्य के पूर्ति के लिए सक्रिय एवं प्रभावि भूमिका निभाने में समर्थ हो तथा ऐसे करने के लिए सर्वदा प्रस्तुत हो।

5. इन समितियों का संगठन प्रजातांत्रिक प्रणाली पर आधारित होना चाहिए। समिति के अधिकांश सदस्य निर्वाचित कुछ मनोनित होनी चाहिए।

amoda
comfort linen

16/12/

प्रसार शिक्षण सहायक सामग्री → प्रसार शिक्षण के ~~प्रसार~~ प्रचार - प्रसार अथवा उसके कार्यक्रम के निष्पादन के लिए प्रसार कार्यकर्ता द्वारा विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे - फार्म विजिट, व्यक्तिगत, भेंट, दूरभाष, परामर्श बातें आदि जैसी व्यक्तिगत संपर्क या पहुंच विधि प्रदर्शन, परिधान प्रदर्शन संगोष्ठी सम्मेलन, सेमिनार तथा शैक्षिक यात्रा आदि जैसी दल सम्पर्क या पहुंच विधि एवं जन सभा, समाचार पत्र मैगजिन एवं जेनरल आदि जैसी जन समूह संपर्क या पहुंच विधि विभिन्न विधियों का उपयोग सरलता पूर्वक एवं सफलता पूर्वक करने के लिए विभिन्न उपकरणों या साधनों या सामग्रियों की सहायता प्रसार कार्यकर्ता लेते है। इनकी सहायता लेना प्रायः उनके लिए आवश्यक होता है। इन्हीं उपकरणों या साधनों या सामग्रियों को प्रसार शिक्षा, शिक्षण सहायक या प्रसार शिक्षा सहायक उपकरण या साधन या सामग्री कहा जाता है।

प्रसार शिक्षा के विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रसार शिक्षण सहायक सामग्री को विभिन्न प्रकार से प्रभावित किया जाता है।

1. श्रव्य-दृश्य (?) → ये उपकरण बोले गए शब्दों को अधिक स्पष्ट करने में सहायता देते हैं क्योंकि इनके माध्यम से विचारों को ज्ञानेन्द्रिया में से एक अधिक की सहायता से प्रस्तुत किया जाता है।

2. सुपे → इनके अनुसार जो प्रसार कार्य

amoda
comfort linen

के शिक्षण में सफलता प्रदान करने के लिए उपयोग में लिये जा सकते हैं।

शिक्षण सहायक उपकरणों का वर्गीकरण → प्रसार शिक्षण सहायक अथवा प्रसार शिक्षा सहायक उपकरणों या सामग्रियों साधनों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण किया जाता है।

1. पढ़े जाने वाले समान → इन्हें लिखित या मुद्रित सामग्री भी कहा जा सकता है। इन्हें दृश्य सामग्री में भी रखा जा सकता है। ऐसे साधनों या सामग्री जिनसे पढ़ने-पढ़ाने के माध्यमों में शिक्षा प्रदान की जाती है। पढ़े जाने वाले समान या सहायक सामग्री के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे – परचे, पत्र, समाचार पत्र सप्ताहिक, पाक्षिक, त्रिमासिक वार्षिक, पत्र पत्रिकाएँ।

2. दृश्य उपकरण या साधन → ऐसे उपकरणों या साधनों जिनसे देखने या दिखाने के माध्यम से शिक्षा प्रसार की जा सकती है की दृश्य उपकरण या सहायक या साधन सामग्री के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है उदाहरण → चित्र, पोस्टर, श्यामपट, खतित, चार्ट, नक्सा, होर्डिंग बैनर फ्लेस्कार्ड, ग्राफ आदि।

3. श्रव्य उपकरण या साधन → ऐसे उपकरण जिनसे सुनने सुनाने के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा सकती है। श्रव्य साधन या सामग्री के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे → ग्रामोफोन, रेडियो, टेप रिकार्ड आदि।

4. श्रव्य - दृश्य उपकरण या साधनों → ऐसे उपकरण या साधनों को जिनसे सुनने, सुनाने तथा देखने दिखाने के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जा सकती है। श्रव्य - दृश्य ऑडियो, विडियो, साधन या सामग्री के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे – चल, चित्र, दूरदर्शन, विडियो, ड्रामा, अभिनएँ।

यह वह माध्यम है कि सभी प्रकार के उपकरण दृश्य उपकरण है पर सभी दृश्य उपकरण नहीं हो सकते है।

शिक्षक सहायक उपकरण या साधनों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. प्रक्षेपण करने योग्य → स्लाइड्स तथा फिल्म।

2. प्रक्षेपण नहीं करने योग्य → स्लाइड्स तथा फिल्म को छोड़ कर सभी।

श्रव्य - दृश्य साधन का प्रयोग का महत्व या लाभ → प्रसार शिक्षा के प्रसार प्रचार एवं इसके कार्यक्रम में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में श्रव्य - दृश्य साधनों का प्रयोग करना अत्यधिक लाभदायक होता है। इनके प्रयोग से होने वाले कुछ प्रमुख महत्व निम्नलिखित है।

1. श्रव्य - दृश्य साधन कम समय एवं

amoda
comfort linen
amoda
comfort linen

Scanned by TapScanner

श्रम में अधिक शिक्षा देते है।

2. ये विषय को सुगम एवं बोधगम्य बना देते हैं।

3. मात्र सुनने की अपेक्षा सुनकर और देखकर जल्दी सिखते हैं।

4. मात्र सुनकर सिखने की अपेक्षा सुनकर और देखकर सिखी हुई बातों का प्रभाव अधिक देर

5. किसी भी विषय को मात्र सुनकर सिखाने की तुलना में उस विषय से संबंधी विभिन्न सामग्रीयों को श्रव्य-दृश्य उपकरणों की सहायता से प्रदर्शित करते हुए उस विषय को सिखाना अधिक सरल होते हैं।

6. उपर्युक्त स्थिति में शिक्षार्थी शिक्षक की बातों या उसकी व्याख्या को अधिक तेजी से ग्रहण करते हैं।

7. श्रव्य-दृश्य साधनों के प्रयोग से देखो और विश्वास करो के सिद्धांत पर आधारित शिक्षा प्रणाली से शिक्षा दी जाती है।

8. ये शिक्षा सहाय उपकरण शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया को मनोरंजन स्वरूप प्रदान करते हैं।

amoda
comfort linen

9. ये शिक्षण सहायक उपकरण अधिक से अधिक लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता रखते हैं।

10. श्रव्य-दृश्य शिक्षण सहायक उपकरणों के सहयोग से विषय को रुचिकर बनाया जा सकता है।

11. इन उपकरणों का प्रयोग शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया को वास्तविक तद, पूर्ण संक्षिप्त, क्रमबद्ध तथा अनावश्यक एवं निरर्थक व्याख्याओं से पे बनाने में सहायक होता है।

AUDIO-VISUAL AIDS

ज्ञानेन्द्रिया हमें जगत का ज्ञान प्रदान कराती है। मानव शरीर में कुल पाँच ज्ञानेन्द्रिया होती है जिसमें नेत्र, हृदय तथा कान श्रव्य ज्ञानेन्द्रिया है। जो देखने और सुनने का कार्य करता है। जनता के बीच किसी विचार के संचार के लिए केवल शब्दो का प्रयोग ही पर्याप्त नहीं है। भारत में अलग-अलग भाषी-भाषी क्षेत्रों के कारण संचार में कठिनाई होती है, अतः संचार के मूल लक्ष्यों को प्राप्त करने में उसे विषय के संबंध में प्रदर्शन का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इन्ही संचार माध्यमों को दृश्य-श्रव्य साधन कहते है।

श्रव्य-दृश्य साधन का विचार अथवा महान व्यवसाय का सही बिम्ब बनाने में सहायक होते हैं। महान शिक्षाविदों पैस्टोलोजी, रूसो तथा फ्रोयबल ने संचार में दृश्य श्रव्य साधनों के प्रयोग की अनुशंसा की है। इसके प्रयोग से शिक्षण

amoda
comfort linen

को अधिक रुचिकर तथा प्रभावी बनाना संभव होता है। दृश्य - श्रव्य साधनो की सहायता से सिखाये जाने वाले विषयवस्तु शिक्षार्थी के मन मस्तिष्क में बैठ जाता है।

दृश्य - श्रव्य साधन की परिभाषा विभिन्न विद्वानो द्वारा विविध प्रकार से दी गई है।

रॉबर्ट्स के अनुसार → "दृश्य - शिक्षा एक सूचना देने की विधि है जो मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है। इसमें कोई मनुष्य पढ़कर या सुनकर शब्दो के मुकाबले में वस्तु को देखकर, ज्यादा अच्छी तरह से समझ लेता है।"

डेकिफर और कोकरन के अनुसार → "श्रव्य - दृश्य साधन वे सामग्री है जिनके सही चुनाव और प्रयोग से किसी वस्तु के बारे में सोचने और फिर उसे समझने में सहायता मिलती है।"

थामा के शब्दो में → श्रव्य - दृश्य विज्ञापन बोले गए शब्दो को अधिक अच्छी तरह समझने में मदद करती है। क्योंकि ये एक से अधिक इन्द्रियो से समझी जाती है।

वर्गीकरण (Classification)

amoda
comfort linen

दृश्य - श्रव्य सामग्रियों का वर्गीकरण → दृश्य श्रव्य साधनो को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है। पहला दूसरा श्रव्य साधन - इसमें दृष्टि की ज्ञानेन्द्रियों का प्रयोग होता है। तीसरा दृश्य - श्रव्य साधन जिसमें श्रव्य और दृष्टि दोनो साधन प्रयोग में आते है।

(Classification of Teaching Aids)

शिक्षण सहायक सामग्री का वर्गीकरण

श्रव्य (Audio)	दृश्य (Visual)	श्रव्य - दृश्य
Type	Flash card	Cinema
Radio	Black bord	movie
Recording	Pictures	T.V
Disc		Drama
Wire		Puppet Shows
Sound commentaries		Commentaries
Public address equipment		

इसके अन्तरगत सुनकर किसी विषय के बारे मे जाने जाते है। इसके कुछ प्रमुख साधन निम्नलिखित है -

(A) RADIO (रेडियो) → यह एक विराट सम्पर्क का संचार-साधन है। लोगो के जीवन - शैली को वांछित दिशा में मोड़ने के लिए, यह लोगो की मनोवृति में परिवर्तन लाने का अच्छा साधन है। रेडियो एक ऐसा शिक्षण सहायक साधन है जो सहज ही घर, कमरे, खेत -

amoda
comfort linen

Scanned by TapScanner

खलिहान सभी जगह पहुँच सकता है। समूह के बीच में रखकर सुनने से समूह में आपस में सभी बातो पर चर्चा - परिचर्चा भी हो सकती है। इसके प्रयोग से लोगो में जल्दी जागरूकता उत्पन्न की जा सकती है।

(B) Recordings (रिकार्डिंग) → रिकॉर्डिंग भी एक अच्छा साधन है। आधुनिक रिकॉर्डिंग में काम की चीज रिकॉर्ड किया जाता है तथा आवश्यकता पड़ने पर उसे मिटाया भी जा सकता है। यह टेप रिकॉर्ड को माध्यम से किसी भी स्थान पर श्रोताओ के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है। टेप पर उन किसानो के विचारो को भी रिकॉर्ड करके सुनाया जा सकता है, जो बताई गई बातो से फायदा उठा चुके है। इन्हे रेडियो के माध्यम से दूरदूर तक संचारित किया जा सकता है और दोबार आसानी से सुना जा सकता है।

(C) पब्लिक एड्रेस सिस्टम P.A.S → इसे साधारण बोलचाल की भाषा में लाउडस्पीकर कहते है। इसके माध्यम से बड़े समूह तक किसी बात का प्रचार किया जा सकता है इसे कन्धो पर लटकाकर प्रसार कार्यकर्ता आसानी से बड़े समूह से बात कर सकता है और इन्हे जरूरी संदेश दे सकता है, इसे बड़े कामो में कई तरीको से प्रयोग में लाया जा सकता है। इसमे माइक्रोफोन, एम्प्लीफायर तथा स्पीकर आदि रहते है।

II दृश्य (visual aids) → प्रसार साधनो का दूसरा भाग है दृश्य साधन इसके तहत देखकर

amoda
comfort linen

किसी वस्तु के विषय में जाना पड़ता है।

(A) चॉक बोर्ड → यह सबसे अधिक प्रचलित दृश्य साधन है। इन पर चित्र या चार्ट बनाए जा सकते है इन पर सामानों की लिस्ट, या प्रक्रियाओं को क्रमवार लिखा जा सकता है। यदि इसका प्रयोग ठीक से किया जाए तो यह कई प्रकार के प्रसार के काम में आ सकता है।

(b) फ्लैश कार्ड (Flash cards) → ये किसी प्रतिक्रिया के संबंध में बनाया जाता है। इस पर चित्र स्पष्ट, लिखा हुआ भाग सरल तथा अक्षर बड़े रहने से समझने में आसानी होती है। ये सभी इसका आकार 10x12 इंच के आस-पास रखा जाता है।

(c) मैग्नेटिक बोर्ड (magnetic board) → इस पर कोई भी चार्ट या पिक्चर आसानी से चिपकाया जा सकता है। इस पर भारी सामग्री भी साट कर दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है।

(d) बुलेटिन बोर्ड (Bulletin board) → बताई गई बातो से संबंधी चीजों का प्रदर्शन, बुलेटिन बोर्ड पर आसानी से किया जा सकता है। पोस्टर, डायग्राम, चार्ट, ब्रोचर, कार्टून, नक्शा, न्यूज पेपर की कटिंग, नोटिस आदि, को कुछ समय तक प्रदर्शित किया जा सकता है। जिसे उसे आते जाते देख सके।

(e) फ्लैनेबल ग्राफ → यह एक खादी का कपड़ा लगा बोर्ड होता है जिसके पीछे की तरफ चिपकाने वाली चीज लगी रहती है जिससे चार्ट,

amoda
comfort linen

Scanned by TapScanner

चित्र या क्लिपिंग, ग्राफ फ्लैनेबल में आसानी सहा देती है।

(f) पिन बोर्ड सिस्टम → यह एक विशेष प्रकार की फिटिंग होती है जिन पर तरह-तरह की सूचनाओं के बोर्ड को प्रदर्शित किया जा सकता है।

(g) नक्शे (Maps) → नक्शे के द्वारा बहुत-सी बाते स्पष्ट रूप से दिखायी जा सकती है। नक्शे का प्रयोग, आँकड़े, दिखाने तथा तथ्यों को बताने में किया जा सकता है।

(h) कार्टून → नए विचारो को समझाने के लिए कार्टून का सफलता पूर्वक प्रयोग किया जा सकता है। इसकी प्रभाव शक्ति पोस्टर के ही समान होती है किन्तु गंभीरता की कमी के कारण पोस्टर जैसा महत्वपूर्ण नहीं होता है।

(i) पोस्टर (Poster) → इसके माध्यम से किसी विचार से दर्शकों को अवगत कराया जाता है। इसमें एक छोटी सी तस्वीर होती है डॉ० सिंह ने कहाँ पोस्टर की लोगों को प्रेरणा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। डॉ० सिंह का कहना है कि एक अच्छे पोस्टर के बारे में यदि पोस्टर पर शीर्षक, नारे के रूप में लिखा रहता है तो देखने वाले पर गहरा पड़ता है। पोस्टर 28×44 इंच का होना चाहिए अक्षर सीधे सादे और दूर से देखा जा सकता है।

amoda
comfort linen

(j) चार्ट → चार्ट का प्रयोग प्रायः किसी वस्तु की तुलनात्मक तक पर देखने के लिए किया जाता है। ये कई ढंग के हो सकते है। जैसे - फ्लो, टैबुल, स्ट्रीपटीज, ट्री चार्ट आदि। चार्ट का प्रयोग 30×24 के आस-पास का रखना चाहिए।

(k) समाचार पत्र (Wall news papers) → यह भी किसी वस्तु या पद्धति को चित्र के माध्यम से प्रदर्शित करते है। परन्तु इसके साथ रहने वाला लिखित अंश विस्तार से रहता है। इसका आकार कम से कम 12×18 होना चाहिए।

(l) फोटोग्राफ → फोटो एक वास्तविक तथा प्रामाणित रिकार्ड माने जाते है।

(m) स्लाइड्स (Slides) → स्लाइड्स पारदर्शी चित्र होते है। जिन्हे तेज प्रकाश की सहायता से बड़ा करके पर्दे पर दिखाया जाता है। ये कई प्रकार से शीशे या प्लास्टिक पर बनाये जाते है।

(n) फिल्म स्ट्रिप → यह विराट संचार का एक एक सस्ता साधन है। इसमें से कई एक अलग-अलग चित्र वाले फ्रेम होते है। इसमें चित्रों को संख्या 100 भी होती है। इन चित्रों में से ही सम्पूर्ण प्रक्रिया को समझाने प्रयास किया जाता है।

(o) एपीडिओस्कोप (Epidioscopes) → यह एक प्रोजेक्शन यंत्र है। जिसका प्रयोग

amoda
comfort linen

Scanned by TapScanner

चित्र, छपी सामग्री, डायग्राम, फोटो, माइक्रोस्लाइड्स को उनके मौलिक रंगो में प्रोजेक्ट करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

(P) बालू अथवा मिट्टी से बनी सामग्री → प्रसार कार्यकर्ता को ग्रामीण क्षेत्रों में काम करना पड़ता है। ग्रामीण लोगों को समझाने के लिए गीली मिट्टी को विभिन्न आकार देकर समझाया जा सकता है।

(S) मॉडल और स्पेसीमेन → कभी-कभी पूरी वस्तु लाकर दिखाना संभव नहीं होता है तब उनका मॉडल बनाकर प्रयोग किया जाता है। छोटी वस्तु को बड़ा करके या छोटा करके उसके मौलिक रूप दिखा सकते हैं।

III श्रव्य-दृश्य साधन (Audio-visual Aids) → प्रसार का सबसे अच्छा साधन श्रव्य-दृश्य साधन है। इसके अन्तर्गत नेत्र और कान दोनों ज्ञानेन्द्रियों का इस्तेमाल किया जाता है।

(A) चलचित्र (Motion Pictures) → चल चित्र प्रसार का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसका प्रभाव बड़ा ही वास्तविकतापूर्ण होता है। इसके प्रयोग नए-नए भाव उनके मन में उभरते हैं। चलचित्र के रूप में तैयार करके किसी भी प्रकार की सीख ग्रामीण जनता तक आसानी से पहुँचायी सकती है।

amoda comfort linen

(B) टेलिविज़न या दूरदर्शन → टी० वी० की ~~लोकप्रियता~~ लोकप्रियता दिन-प्रति दिन काफी बढ़ती जा रही है। इस माध्यम से एक ही स्थान पर बड़े दूर के क्षेत्र में शिक्षण संदेश पहुँचाया जा सकता है।

(C) ड्रामा, कठपुतली तथा अन्य पारम्परिक मिडिया → यह सब एक ऐसा साधन है जो लोगों का मनोरंजन भी करते हैं तथा उन्हें कुछ सिखाते भी हैं। इनका प्रयोग लोगों में प्रिय होता है। अतः जनता का कुछ सीखने-बताने के लिए किया जा सकता है।

(d) विडियो टेप → विडियो टेप में ध्वनि और चित्र दोनों ही रिकॉर्ड हो जाते हैं। पुनः बड़े T.V पर दिखाकर ग्रामीणों को प्रभावित किया जा सकता है। किन्हीं विषयों पर लोगों के विचार प्रयोग किये गये कृषक या गृहिणी के निजी अनुभव दिखाकर लोगों को ज्ञान में वृद्धि की जा सकती है। उन्हें प्रेरित एवं उत्साहित किया जा सकता है।

CONCLUSION (निष्कर्ष) → प्रत्यक्ष अनुभव सम्पूर्ण ज्ञानार्जन का आधार होता है। इससे प्रसार कार्य को सहारा मिलता है। टी० वी०, रेडियो, सिनेमा के व्यवहार में बदलाव लाने का एक अच्छा साधन है क्योंकि इनका प्रस्तुति करण मनोरंजन प्रधान होता है।

दृश्य-श्रव्य साधनों के जहाँ इतनी लाभ होते हैं वहाँ इनसे कुछ हानियाँ भी हो सकती हैं। इनके प्रयोग में कुछ त्रुटि होने से सीखने वाले कभी-कभी गलत धारणा भी बना लेते हैं। पर इनसे बचाव सलाही अध्ययनों में पाया गया है कि प्रसार कार्यकर्ता अपने कार्यों में बहुत कम दृश्य-श्रव्य

amoda comfort linen

साधनो का प्रयोग करते है, इसलिए इसका काम पूर्ण सफल नहीं हो पाता है।

METHOD OF TEACHING

शिक्षण की विधि → शिक्षण प्रक्रिया मे शिक्षण विधियो की उपयोगिता मे इन्कार नहीं किया जा सकता है। शिक्षा के उद्देश्यो तक पहुँचने मे विधियाँ उस मार्ग पर कार्य करती है जिसके माध्यम से वहाँ तक पहुँचा जा सकता है। शिक्षण उद्देश्यो मे निश्चित होने के उपरान्त तुरन्त ही विधियों के चलन का प्रश्न उठता है, पिछले दशको मे इस विषय पर विवाद सा उठ खड़ा हुआ है विधियों अधिक महत्वपूर्ण है या विषय वस्तु का ज्ञान।

इस संबंध मे प्रो० वाइलिंग तथा वाइलिंग का कहना है कि :-

"शिक्षा शास्त्र को शिक्षण प्रक्रिया का निष्क्रिय पक्ष ना जानकर शिक्षा का सक्रिय पक्ष मानना चाहिए। आदर्शवादियों के अनुसार शिक्षण की प्रणाली ऐसी होनी चाहिए। जिससे बालक के आन्तरिक शक्ति का पूर्ण विकास हो सके और वह परम मूल्यों का साक्षात्कार कर सके। आदर्शवादी शक्ति समाज के लक्ष्यों मे समन्वय मानते है। बालको को उनके विकास के लिए उनुकूल परिवेश मिलना चाहिए। उसे निर्देश और प्रशिक्षण की आवश्यकता है। उसके

शिक्षा का वर्तमान अनुमत संबंध है। इस प्रकार ~~के~~ आदर्शवादी और व्यवहारवादी शिक्षा प्रणाली आपस मे मिलते जुलते है।

इस प्रकार कहाँ जाता है कि शिक्षण विधियों का शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। पद्धति वह मार्ग है जो ज्ञान की प्राप्ति के लिए अपनाया जाता है। इसी प्रकार शिक्षण मे भी पद्धति का वही महत्व है जो किसी विशिष्ठ स्थान पर पहुँचने के लिए सत्य मार्ग का है। जिस प्रकार सत्य मार्ग के अभाव में कोई व्यक्ति ~~कि~~ विशिष्ट स्थान तक नहीं पहुँच सकता है। उसी प्रकार पद्धति के अभाव में ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए कुछ विधियों का प्रयोग करना चाहिए। विधियो की परिभाषा एक विद्वान ने इस प्रकार दी है। पद्धतियों से हमारा तात्पर्य उन साधनों से है जो शिक्षा विशिष्ट रूप से कक्षा में शिक्षा देने में प्रयोग करते हैं। कुछ प्रमुख शिक्षण पद्धतियों निम्नलिखित है।

वर्णन पद्धति (~~Discussion~~ Discription) → वर्णन पद्धति का अर्थ है किसी घटना का या कहानी के यथा तथ्य वर्णन कर देना। वर्णन इस ढंग से किया जाता है कि तथ्य संबंधीत वर्णन छात्रो के मन मे चित्रित हो जाये, इस विधि का प्रयोग इतिहास भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र तथा कभी-कभी विज्ञान आदि। विषयो में किया जाता है इस विधि मे योग्यता लाने के लिए कुछ खास बातो को ध्यान मे रखना पड़ता है। वर्णन की भाषा सरल हो। वर्णन की गति बहुत तेज या बहुत धीमी हो जाये। वर्णन छात्रो के आयु के अनुकूल हो।

amoda
comfort linen
amoda
comfort linen
Scanned by TapScanner

2. विवरण पद्धति → विवरण देते समय अध्यापक किसी घटना या तथ्य की कल्पना द्वारा रोचक तथा मनोरंजक बनाने का भी प्रयास करता है। विवरण का प्रयोग इतिहास, भूगोल तथा भाषा आदि पाठों में किया जाता है। विवरण के द्वारा इन विषयों में रोचकता आ जाती है। विवरण को रोचक बनाने के लिए ब्लैक बोर्ड का भी प्रयोग करना चाहिये। जिन बातों का विवरण दिया जाता है वह बालक के बौद्धिक स्तर के अनुसार होना चाहिए। विवरण करते समय अध्यापक के हाव-भाव में स्वाभाविकता होनी चाहिए। विवरण न तो बहुत लम्बा और न अत्यधिक छोटा होना चाहिए।

3. तुलना (Comparission) → जब हम दो विषयों या तथ्यों के पक्ष और विपक्ष की तुलना करते हैं तब वह तुलना कहलाती है। नवीन ज्ञान का बोध करने के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि अनेक उदाहरणों के प्रयोगों द्वारा सिद्धान्तों की समानता व असमानता की तुलना की जाए। नागरिक शास्त्र, भाषा एवं इतिहास आदि विषयों में तुलनात्मक अध्यापन का अपना अलग महत्व है। गणित, भूगोल तथा व्याकरण में भी तुलना का प्रयोग विषय को रोचक बनाने में विशेष सहायक होता है।

4. व्याख्या पद्धति (Explanation) → व्याख्या का प्रयोग कठिन विषय को सरल बनाने के लिए किया जाता है। भाषा के शिक्षण में इस युक्ति का प्रयोग विशेष लाभदायक है। व्याख्या करते समय कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना चाहिये जैसे — कठिन स्थानों के लिए व्याख्या का प्रयोग उचित होता है साथ ही व्याख्या न तो बहुत लम्बा होना

amoda
comfort linen

चाहिए न ही बहुत छोटा किन्तु इतना बड़ा होना चाहिए की विषय स्पष्ट हो जाए। साथ ही बालक के बौद्धिक स्तर के अनुकूल हो।

5. कहानी कहना पद्धति (Story telling) → कहानी कहना भी एक कला है अतः अध्यापक को कहानी कहने की कला में निपुण होना चाहिए। प्राचीन काल से ही किसी विषय को रोचक बनाने में कथा प्रणाली का उपयोग विशेष उपयोगी सिद्ध हुआ है। भाषा भूगोल आदि विषयों में कहानी प्रणाली का प्रयोग सफलता के साथ-साथ किया जा सकता है। कहानी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए एक वैज्ञानिक का कथन है कि शैक्षिक दृष्टि से कहानी का प्रयोग अनेक बाते सीखने के लिए किया जा सकता है व पढ़ना-लिखना, भाषा का ज्ञान प्राप्त करना इतिहास जीव विज्ञान आदि अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ कहानी का प्रयोग किया जा सकता है। पंडित सीताराम चतुर्वेदी के अनुसार कहानी से ज्ञान की परिधि का विकास भले ही ना हो एक भी तथ्य भले ही न बताए परन्तु मनुष्य को उसके लक्ष्य के बारे में ज्ञान हो गया हो तो समझो कहानी पढ़ना सार्थक हो गया।

6. प्रश्न और उत्तर पद्धति (Questioning and Answering) → यह प्रणाली बालकों के प्रशिक्षण में शिक्षण का एक महत्वपूर्ण साधन है। प्रश्नों के द्वारा ही अध्यापक छात्रों के सम्पर्क में आते हैं। ~~प्रश्नों के द्वारा ही~~ रायन माउन्ट के अनुसार प्रश्न करने की उत्तम शैली का विकास करना यही प्रत्येक शिक्षक की सबसे बड़ी आवश्यकता है। क्या, क्यों, कब, कैसे, कौन तथा कहाँ इसके

amoda
comfort linen

सहयोगियो का प्रयोग करना लाभदायक सिद्ध होता है। प्रश्नो के महत्व पर प्रकाश डालते हुए रायबर्न लिखते है —
शिक्षण में प्रश्न का सर्वाधिक महत्व होता है। कथन कोई अतिशयोक्ति पूर्ण नही है कि शिक्षक की सफलता उसकी भली - भाँति प्रश्न पूछने की योग्यता पर निर्भर करती है। प्रश्न बालको को उत्तेजित करते है और यदि उसका उपयोग निपुणता पूर्वक किया जाए तो इसके शिक्षा प्रगति को भी निर्देशित कर सकते है।

7. सहानुभूतिपूर्ण पद्धति → यहाँ पर निर्देश से तात्पर्य शैक्षिक आदेश या अध्यापक से है। हरबर्ट ने शिक्षा मे अध्यापक को आवश्यक माना है। अध्यापन से तात्पर्य बालक के ~~मस्ति~~ मस्तिष्क को विभिन्न प्रकार की सामग्री से भरना नही है बल्कि उसका परिष्कार करना है। इसमे शिक्षक के सहानुभूतिपूर्ण निर्देशन की आवश्यकता है।

8. क्रियात्मक पद्धति → बालक किसी भी कार्य को करके अधिक अच्छे ढंग से सीख सकता है। विद्यालय में भाषण के बाद, विद्यार्थी गण प्रश्न पूछने और वाद - विवाद किन्तु उससे भी महत्वपूर्ण क्रिया रचनात्मक क्रिया है जो कि स्वभाविक निरंतर व प्रगतिशील होनी चाहिए। यह आत्माभिव्यक्ति की ओर ले जाती है। इससे बालक की सर्वेक्षा शक्तियों का विकास होता है। मानसिक क्रिया के द्वारा बालक प्रसन्नता और प्रेमपूर्वक सिखता है। जिससे उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। और इसे बहुत सी नई - नई वस्तुओं से परिचय प्राप्त होता है।

amoda
comfort linen

पुस्तक पठन पद्धति → यह प्रणाली भी मनोवैज्ञानिक है। इसमें शिक्षक पाठ्य पुस्तको की मदद से शिक्षण कार्य है इसकी जानकारी प्राप्त करते है। इसका प्रयोग भी दो ढंग से किया जाता है। अध्यापक स्वयं पुस्तक पढ़कर छात्रों को सुनाते थे या छात्र ही क्रम से पुस्तक के अंश को पढ़ देते है। बीच - बीच में अध्यापक भी प्रश्न करते थे। और कठीन शब्दो या आवश्यक अर्थ बता देते है। आजकल अधिकांश शिक्षक इस प्रणाली को अपनाते है क्योंकि इसमे परिक्षण की आवश्यकता नही होती है।

10. तर्क पद्धति → इस प्रणाली में प्रशिक्षण लाने की विषय वस्तु जो तर्क के द्वारा अधिक सुलझा हुआ तथा विद्यार्थियों के लिए आसान बनाया जा सकता है। जिसका एक ही विषय पर विभिन्न प्रकार से तर्क - वितर्क कर पाठ को आसान बना सकते है। तर्क करने से विद्यार्थियों का मस्तिष्क भी विकसित होता है। वे अपने दिमाग से अधिक सोच विचार करता है। फलस्वरूप मस्तिष्क अधिक विकसित होता है।

प्रयोजन प्रणाली → स्कूल में जिन विषयों की शिक्षा दी जाती है तथा जिस प्रकार स्वभाविक निर्माण किया जाता है, वह पाठ्य विषय में वास्तविक समाजिक जीवन से मेल नही खाता। प्रयोजन पद्धति उस पुस्तकीय तथा अकर्मण्य पद्धति के विरुद्ध एक खुला विद्रोह है। क्योकि इस पद्धति द्वारा बच्चो को सावधानी पूर्वक प्रशिक्षण दिया जाता है। इन्हे संसार की वास्तविकताओं का ज्ञान कराया जाता है। अनेक शिक्षा प्रणाली स्पष्ट तथा निश्चित शब्दों में पुरानी पद्धति का विरोध करते है क्योकि इसमे

amoda
comfort linen

Scanned by TapScanner